पृष्ठभूमि

भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग का नाम नवंबर 2003 में बदलकर आयुर्वेद, योग वे प्राकृतिक चिकित्सा एवं होम्योपैथी विभाग रखा गया। विभाग की स्थापना का उद्देश्य आयुर्वेद,योग व प्राकृतिक चिकित्सा, सिद्ध ,यूनानी एवं होम्योपैथी के संबंधित विकास पर निष्पादित करना है। आयुर्वेद विभाग राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर शैक्षणिक मानकों के उन्नयन, गुणवत्ता नियंत्रण व औषधियों के मानकीकरण औषधीय पादप सामग्री, अनुसंधान व विकास, जागरूकता सृजन ओर इन चिकित्सा पद्धति की प्रभावकारिता पर निरंतर जोर देता रहा है।

आयुष शब्द में शामिल हैं आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी । ये पद्धतियां भारत में और भारत के बाहर उद्‌भूत हुई परंतु, कालांतर में भारत में अपना ली गईं और अपने अनुकूल कर ली गईं। देश के अधिकांश राज्यों में ये पद्धतियां लोकप्रिय हैं। 18 राज्यों में भा.चि.प. एवं हो. के पृथक् निदेशालय हैं। यद्यपि आयुर्वेद इन सभी राज्यों में लोकप्रिय है, परंतु यह पद्धति केरल, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश उत्तरांचल और उड़ीसा राज्यों में अधिक प्रचलित है। यूनानी पद्धति आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान में विशेष रूप से लोकप्रिय है। होम्योपैथी उत्तर प्रदेश, केरल, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, बिहार और उत्तर-पूर्वी राज्यों में अधिक लोकप्रिय हैं।

उद्देश्य

- देशी भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी के शैक्षणिक मानकों का उन्नयन।
- वर्तमान अनुसंधान संस्थानों का सुदृढीकरण के साथ-साथ उन चिन्हित रोगों पर अनुसंधान कार्य को समयबद्ध ढंग से सुनिश्चित करना जिनको इन चिकित्सा पद्धतियों का प्रभावी उपचार मौजूद है।
- इन चिकित्सा पद्धतियों से संबंधित औषधियों के संवर्धन, कृषि और पुन: सृजन से संबंधित स्कीमों को बनाना।
- भारतीय चिकित्सा पद्धति होम्योपैथी और उसकी औषधियों के लिए भेषजसंहितागत मानकों को विकसित करना।